

اضواء البيان

في

ترجمة القرآن

अदवाउल बयान

ई

तर्जमतिल कुरआन

उमरत मौलाना यूसुफ मोतारा द. अ.



**નોંટ:** ઈસ તર્જમે કી ઈશાઅત કી તહરીરી ઈજાઝત ઈદારા અઝહર એકેડમી લન્ડન કે કાનૂની શૌબે સે લે કર આપ ભી તિજરત કે લિયે યા લિવજિહલ્લાહ ઈશાઅત કર સકતે હૈં.

નામ: અદવાઉલ બયાન ફી તર્જમતિલ કુરઆન  
મુતર્જિમ: હઝરત મૌલાના યૂસુફ મોતારા દા. બ.  
સફ્હાત: ૮૬૪  
ઈશાઅતે અવ્વલ: શવ્વાલ ૧૪૩૪ હિજરી / સપ્ટેમ્બર ૨૦૧૩ ઈસ્વી  
નાશિર: અઝહર એકેડમી, લન્ડન

મિલને કે પતે:

૧. કુતુબખાના યદ્યવી, મુત્તસિલ મદરસા મઝાહિર ઉલૂમ, સહારનપુર
૨. દારુલ ઉલૂમ સૂરત, છડા ઓલ, રામપૂરા, સૂરત, ગુજરાત ૩૯૫ ૦૦૩
૩. જામિઅતુઝ ઝહરાઅ, મુલ્લા મોહલ્લા, નાની નરોલી, સૂરત, ગુજરાત, ૩૯૪ ૧૧૦
૪. કાઠિયાવાડ એકેડમી, જામિઆ ઈમામ મુહમ્મદ ઝકરીયા, શિશુવિહાર, ભાવનગર, કાઠિયાવાડ, ગુજરાત

નાશિર:

**Azhar Academy Ltd**

54-68 Little Ilford Lane, Manor Park  
London E12 5QA, UK

Tel: (+44) 208 911 9797 | Fax: (+44) 208 911 8999

**Email: sales@azharacademy.org**

**Web: www.azharacademy.org**

## بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

### अर्जे नाशिर

उमारे मुशकिक शैभ और उस्ताजे मोलतरम उजरत अकदस शैभुल उदीस मौलाना यूसुफ मोतारा साडभ दामत क्यूजुडुम दारुल उलूम डोल्कम्भ बरी में दारुल उलूम के ँजितदाई सावों से ले कर अब तक तर्जमअे कुरआन शरीक पढाते रहे. शुर् में कई साल तलभा अपनी तर्जमे की कापियां लाडिकीन को मुन्तकिल करते रहे. क्तिर कापियों की जगा कैसेट्स, क्तिर सीडीज मुन्तकिल डोती रहीं. यहां तक के पंदरा बीस बरस से जब ये सीडीज वेबसाईट पर रभ दी गईं, तो दारुल उलूम के मुतअद्विलकिन के लिये मजीद आसानी डो गई थी.

अब आभिरि मरडला तभाअत का रेड गया था. अगरये तलभा ने अपने तौर पर टाईप कर के, मालूम नडी कुल्वी या जुजवी तौर पर, ये मरडला भी तै कर लिया था, लेकिन उमारी ज्वाडिश थी के बाकाईदा साडिभे तर्जमा की ँजजत से डम ँस तर्जमे को अजडर अेकेडमी की तरफ से तभअ कराअें. मगर उमारी दरज्वास्त के बाद शुर् में तो ँन्कार डोता रडा. बाद में ँस शर्त के साथ ँजजत मिली के कोई माडिर ँस तर्जमे को बनजरे तसडीड व ँस्वाड मुकम्मल तौर पर देभ ले.

युनांये डम ने मुशकिक दोस्त जनाभ जलील अशरफ साडभ उस्मानी जीद म्जुडुम के तवस्सुत से उजरत मुकती मुडम्मद तकी उस्मानी साडभ दाम जिल्लुडुम से उस पर नजरे सानी की दरज्वास्त की, तो उनडों ने अपने दारुल उलूम करायी के शौभअे तप्स्सुस क्तिद दअवड के डाईरिक्टर, उजरत मौलाना साज्जुदुर रडमान साडभ कान्धलवी रत्नतुल्लाडि अलैड के सुपुई ये काम इरमा दिया.

डक्टर साज्जुदुर रडमान साडभ के वालिदे मोलतरम मुडद्विसे कबीर शारिले सुनने निर्मिजी उजरत मौलाना अशकुर रडमान साडभ कान्धलवी नव्वरल्लाडु मरकदलू हैं. युनांये आप ने यंद माड में क्तिबरे सिन्नी और ँल्मी मशागिल और दारुल उलूम करायी की ज्जिदमात के साथ तर्जमे की ँस्वाड व तसडीड का काम मुकम्मल इरमा लिया. अल्लाड तभारक वतआला उनडें बेडद जज्जअे जैर अता इरमाअे और ँन ज्जिदमाते जलीला को कबूल इरमा कर उन के दरज्जत बुलन्द इरमाअे. आमीन.

अभीर में दुआ है के कलामे ँवाडी के ँस तर्जमे के सिलसिले में जो कोताडी, कमी वाकैअ डुई डो, अल्लाड तआला उसे मुआइ इरमाअे और अब तक जिन उजरात ने ँस में जंइशानी की है या आईन्दा जो करेंगे, उन सब को अल्लाड तआला कबूल इरमाअे और सब के लिये उज्जरी नज्जत का जरिया बनाअे. आमीन.



## आह! उजरत मौलाना अब्दुर रहीम साडभ मोतारा रडमतुव्वालि अलखुड

(हर अस्व, ये तर्जमा 'अदवाउल बयान' कारिधन के लार्थों में नलीं पलॉय पाता, अगर उजरत मौलाना अब्दुर रहीम साडभ रडमतुव्वालि अलखुड की दुआओं और तवज्जुहात और उन की तलरीज व तश्ज्ज्ज उन के बिरादरे पुर्द उजरत मौलाना यूसुफ मोतारा पर न लोतीं. बलके ये केडना ज्यादा मुनासिब है के उजरत मर्दूम के पैडम ँसरार और वाजेड डुकम के बाह डी ये तर्जमा पेडली भरतभा मन्जरे आम पर आया था. ँस विये मुनासिब मालूम लोता है के उजरत मौलाना मर्दूम के मुप्तसर डालात और उन की पुसूसीयात यलं शांमिले ँशाअत कर डी ज्ज्ज. अल्लाड तआला मर्दूम को ज्ज्ज्ज पैर डे और ये तर्जमा उन के डसनात में ँज्ज्ज का सभभ डो.)

उजरत मौलाना अब्दुर रहीम साडभ मोतारा अल्लाड के अेक आतौडिक बन्दे, आमोश तभीअत दाँ, सर्जमीने कुडरिस्तान पर अेक शमअे इरोजं, मीनारअे नूर, मंभअे ँलमे डीन और नाशिरे रुश्ट व डिदायत थे. उनलं ने बयपन डी से तालीम व तर्भयित की तरङ्ग तवज्जुड डी और ज्ज्जरी उलूम की तकमील के बाह आतिनी उलूम की तलकीक और तलसीव के विये वकत की मशडूर शप्सीयत कुत्भे आलम शैषुल ड्टीस उजरत मौलाना मुडम्मड ज्ज्जरीया साडभ कान्धल्वी रडमतुव्वालि अलखुड की षिडमते आबर्कत में डज्जरी डी, ज्जिन से पेडले ँलमे ड्टीस की डौलत डसिल की, ज्जो गोया के आतिनी उलूम की तलसीव और तकमील के विये तम्डीह थी. ँस तरड उजरत शैष रडमतुव्वालि अलखुड के यलं अेक आम शागिर्द से आस शागिर्द और अेक आम कातिभ से आस कातिभ और आस आडिम का मकाम डसिल कर विया, ड्किर सुलूक व तरीकत का रास्ता ली बडुस्न व भूभी तै कर विया, ज्जिस से उजरत शैष ने अेडतेमाम से आप को मुज्ज्ज्जे बयअत बना विया और षिर्कअे षिवलूत से सरडराज ड्रमाया. यूं राडे सुलूक में ली अकरभ और अषस्स डोने का मकाम डसिल कर विया, यलं तक के उजरत शैष को आप से राडत मडसूस डोने लगी, ज्जिस का ँज्ज्ज्ज उजरत शैष ने यूं ड्रमाया के: 'अब्दुर रहीम! तुज से ड्ज्ज्ज्ज राडत मिलती है.'

ड्किर ँशाँड ड्रमाया के ज्ज्ज्ज्ज्ज के लक व डक वीराने में ज्ज्ज कर डीन की शमअ रोशन करो और डीने मुभीन की दावत डो और तालीम व तर्भयित का ँन्तज्ज्ज्ज करो, और ज्ज्ज्ज्ज व तारीकी के मुलक में ँलम की रोशनी के डीप ज्ज्ज्ज्ज्ज. युनांये उजरत मौलाना अब्दुर रहीम साडभ ने ज्ज्ज्ज्ज्ज के अेक गैर तरककी याङ्गता डूर उङ्गतादा ँललके यीपाटा में पलॉय कर अेक डीनी ँदारे की बुन्याड रष डी, और मअडुडुर रशीड अल-ँस्लामी उस का नाम रषा. ँस तरड उजरत शैष ने मौलाना अब्दुर रहीम को अङ्गीका की सर्जमीन ज्ज्ज्ज्ज्ज के विये मुन्तषभ ड्रमाया, और उन के ँगोटे ल्हाँ उजरत मौलाना यूसुफ साडभ को बर्तानिया की

सर्जमीन पर एलम की शमअ रोशन करने के लिये मुर्करर इरमाया, और दोनों को अेक पास रकम भी एनायत इरमाए, और दोनों के एदारों को अपने कुदूमे मयमनत से भी मुशररर इरमाया.

उजरत मौलाना अब्दुर रलीम साडभ ने अपनी एलमी काबिलीयत और सलालीयत के बावजूद उजरत शैभ के लुकम पर ऐसे बयाबान जंगल में जाने को पसंद किया, और अपनी आला एलमी एसितअदाए को वडां के जडाड जडन्कार को साइ करने में अत्म कर दिया, और ऐसा शजरअे तयिआ लगाया के

أصلها ثابت وفرعها في السماء

का मनजर मदसूस डोने लगा. मौलाना ने जिस दौर में वडां जा कर काम शुरू किया, वो एन्तिलाए पुरभार था, बलके अेक यटयल मैदान था, जडां पर डर तरइ सियाली, तारीकी और जडावत के बादल मंडला रहे थे, और पढे लिभे एलमी आदमी का जू लगना बडोत दुशवार था. मगर उस डिम्मत के जियाले ने ये सभ अल्लाड की पुशनूदी और अपने शैभ के लुकम की तामील में भरदाशत किया और अभीर जिन्दगी तक शैभ के लुकम को निभाया, और वडीं की आक में आसूदा डो गअे. एस तरड बइजले पुदा वडां जो तालीमी काम शुरू किया था, उस का इैज अईका के बडोत से मुल्लों, पास तौर से जाम्बिया और उस के आस पास के मुल्लों में पूब इैवा लुवा डै. मौलाना ने सियाड क्षम नरुव के तलभा को जडां दीन और एलमे दीन सिआया, कुरआने करीम और दीनीय्यात की जडां तालीम दी, वडीं उन को उदू जभान भी सिआए, जो एस वकत भरें सगीर डिन्द व पाक डी की नडीं, बलके दुन्या में अरबी अंग्रेजी के साथ ज्यादा बोले जाने वाली जभान डै, और अरबी के बाद जिस में दीन का सभ से ज्यादा सरमाया मौजूद डै.

उजरत मौलाना अब्दुर रलीम साडभ की पैदाएश यकुम जुमादस सानिया १३६३ डिजरी मुताबिक २४ मई १८४४ बरोज बुध मळअ वरेडी में लुई. आप के आबाए वतन और आनदान और एभितदाए डालात से मुतअल्लिक आप के छोटे भाए उजरत मौलाना यूसुइ मोतारा साडभ तडरीर इरमाते डें के 'डमारा आनदान वरेडी जिवा सूरत में सदियों से मुकीम डै, और जिराअत पेशा डै. मगर डमारे दादा मोडतरम और वालिद साडभ ने जमीन बटाए पर दे कर तिजरत का पेशा एभितयार किया, और दादा मरूम ने जुनुभी अईका का सइर किया. कई साल वडां मुकीम रहे और असा दराज के बाद वतन वापस लौटे और यंद रोज बाद डी वरेडी में एन्तिकाव इरमाया. दादा साडभ ने एकलौते बेटे को औलाद में पीछे छोडा. वालिद साडभ ने अपनी वालिदा की आगोशे तर्बायत में यतीमी की डालत में परवरिश पाए, और जवानी को पडोंय कर तिजरत शुरू कर दी. और लथुरण के अेक मुअय्यर आनदान में पेलवा निकाल लुवा और अल्लाड ने अेक लडका एनायत इरमाया और नाम मुडम्मद अली तजवीज इरमाया. और पेलवी ओडलिया का यंद साल डी में एन्तिकाव डो गया. तब दूसरा निकाल डमारी वालिदा आमिना बिन्ते मुडम्मद बिन एरमाएल देसाए से लुवा. डमारे नाना के आभा व अजदाद दरयाअे तापती के किनारे पर पुलुवड नामी करबे में आबाद थे. वडां एस आनदान की जमीन पर बनाए लुई किनारे वाली मरज्जुद अब तक मौजूद डै. किसी वजल से ये आनदान नानी नरोवी मुन्तकिल डो गया, जो उस जमाने में तकरीबन जंगल डी था. यडां जिराअत का पेशा एभितयार किया और दीनी अैतेबार से न सिई गाँठ में, बलके

अतराङ्क में ये पानदान, बिलपुसूस हमारे नाना जन दीनी लवके में मशहूर थे. ईस विये आप ली का दौलतकदा यलां आने वाले उलमा व मशायिफ के विये मेहमानपाना होता था.

वाविदा मोहतरमा से निकाल के बाद वाविदा की दीन्दारी का असर वाविदा साहब पर भी आखिस्ता आखिस्ता पडना शुरू हुआ. यलां तक के वाविदा साहब मौलाना अब्दुल गफ्फर अंगाली मुलाजिर मक्की (जो उजरत अल्वामा मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी के पलीफ़ा मुज्ज थे) से बयअत हुवे और जिफ़ व शगल शुरू किया. धर निकाल के बाद पांच छे साल तक कोई औलाद नहीं हुई. ईसी असना में उजरत मूसा सुहाग के सिलसिले के अके बुजुर्ग तशरीफ़ लाये. वाविदा साहब ने औलाद के विये दुआ की दरभवास्त की. आप ने वाविदा के विये अंगूठी दे कर अके लडके की बशारत दी और डोने वाले लडके के विये धल्म व सलाह वगैरा औसाफ़ से मुत्तसिफ़ डोने की बशारत दी. साल भर के बाद वो बुजुर्ग दोबारा तशरीफ़ लाये तो उस से पेडले मौलाना अब्दुर रहीम साहब का तवल्लुह डो युका था. उन्हे देप कर मसज़र हुवे, दुआओ दीं, और दूसरी अंगूठी दे कर अके दूसरे लडके की उसी तरह बशारत दी.

वाविदा साहब ने जब से जिफ़ व शगल शुरू किया था, आखिस्ता आखिस्ता उन की तबीअत पर जिफ़ का असर बढ़ता चला गया, यलां तक के वाविदा साहब पर जज्बी कैफ़ियत का गलबा डोने लगा और उसी कैफ़ियत में वाविदा साहिबा से इरमाते के: 'मैं ने तर्के दुन्या का इरादा कर लिया है. आप अपने घर चली जाओ.' पानदान के बडों ने उर तरह समज्जडाने की कोशिशें की, बिलापिर उन्हे ने तलाकनामे पर इस्तअत करवा विये के कडीं ये डालत जुनून में तबदील डो गई, तो बीवी उम्र भर के विये मुअल्लक रेल जायेगी, और तलाक की इदत वज्जे हमल थी. युनांचे तलाक के चंद रोज़ बाद ली नन्डियाल नानी नरोवी में हमारे नाना के यलां मेरी यकुम मुहर्मुल डराम १३६६ खिजरी पीर की शब में विलादत हुई. जब उम्र तकरीबन आठ साल हुई तो जुनूबी अफ़ीका में हमारी पावा ग्यारा बरयों को छोड कर डालते जग्गी में इन्तकाल कर गई. उन की जगल पालू ने वाविदा से निकाल किया और वाविदा अफ़ीका चली गई, और नाना नानी ने (भाई साहब की और) मेरी परवरिश की. चंद साल बाद उन दोनों का साया भी सर से उठ गया. उन के बाद पावा ने परवरिश की और परवरिश का एक अदा कर दिया.'

उर बुजुर्ग की अलग अलग सिफ़ात होती हैं, मगर उजरत मौलाना की बडोत सी सिफ़ात में से अके सिफ़त ये थी के वो अडले तअल्लुक का बडोत विलाज करते थे और जो अडले मदारिस वलां पडोचते थे उन को डकीर नहीं समज्जडते थे. नहीं तो आज कल आज अडले धल्म और मशायिफ ली नहीं, बल्के आज मर्तबा तो आज अडले मदारिस भी जब उन को मालूम डो जाये के आने वाला चंदे वाला है या महरसा वाला है, तो उस को डकीर समज्जडते हैं, और डकीर न भी समज्जहें मगर ज्यादा पातिर में नहीं वाते, उस की तरफ़ तवज्जुह और उस का तआवुन करना तो दूर की बात है. ईस सिफ़त में मुफ़किरे इस्लाम उजरत मौलाना सैयद अबुल डसन अली नदवी न्वरल्वाडु मरकदु बडोत मुमताज थे. वो उर आने वाले की कदर करते थे, पास तौर से दीनी कामों की निस्बत पर जो भी आते थे. ईसी तरह उजरत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा भी ईस सिलसिले में मुमताज थे, जो अडले मदारिस का पास पयाल इरमाते थे और उन का उर मुमकिन तआवुन करते थे. डेरत होती है के वो शैफ़ डोने के भावजूद वेने वाले उजरत ली नहीं, बल्के डेने वाले उजरत थे. वो खिन्दुस्तान में आज मशायिफ को पुसूसी रकमें

ભેજતે થે. એક સિક્ત મૌલાના મેં યે થી કે વો મુસ્તગની થે, ગોયા કે ઉન કો લોગોં સે મિલ કર વહશત હોતી થી. વો અપને મામૂલાત કે પાબન્દ થે, મામૂલાત મેં ઝરો બરાબર ભી ફર્ક નહીં આતા થા. નવાફિલ વ તિલાવતે કુરઆને કરીમ મેં અક્સર મશગૂલ રેહતે થે.

બાત સાફ કરતે થે, ઓર સાફ સીધી બાત હી કો પસન્દ કરતે. કિસ્સી સવાલ કે જવાબ મેં બાત કે તકરાર ઓર હેરાફેરી કો નાપસન્દ ફરમાતે થે, ઓર ઉસ પર ફૌરન નકીર કરતે થે. ઉન્હોં ને અપને મઅહદ કો ચલાને મેં એક ચીઝ કા ખાસ તૌર સે એહતેમામ કિયા હે કે અપને મદરસે મેં ઝકાત કી મદ ઉન્હોં ને નહીં લી, સિફ્ લિલ્લાહ અતીયે કી મદ મેં ઉન્હોં ને અપને ઈદારે કી તામીરાત ભી કી, ઓર સાલાના ખર્ચ જો અચ્છા ખાસા હે, વો હમેશા લિલ્લાહ સે ચલાયા હે. વરના તો આજ કલ તુજ્જાર કા ભી ઝયાદાતર મિઝાજ ઝકાત દેને કા હે. મગર હઝરત કી કરામત હી કહિયે કે ઐસે આઝમાઈશ કે પુરઆશોબ વ પુરફિતન દૌર મેં ઉન્હોં ને અપને મઅહદ કો લિલ્લાહ કે ઝરિયે સે ચલાયા. કુરઆને કરીમ કી યે આયત

ومن يتوكل على الله فهو حسبه، ويرزقه من حيث لا يحتسب

ઐસે હી લોગોં કે લિયે હે.

બહરહાલ, હઝરત કી કિન કિન સિક્ત કો બયાન કિયા જાએ? વો તો અલ્લાહ કે એક વલી ઓર અલ્લાહ કી નિશાનિયોં મેં સે એક થે. ઓર ગોયા કે સરઝમીને અફીકા કે લિયે યાહે ઉન કો ઈમામ કહા જાએ યા મુસ્લિહ કહા જાએ યા મુજદિદ કહા જાએ, હર એક લકબ ઉન કે લિયે મૌઝૂં હે. વો બેઝરર ઓર મુખ્લિસ ઈન્સાન થે. અલ્લાહ તઆલા ને ઉન કો હઝરત શૈખ કી દુઆ કી બરકત સે હજ વ ઉમરા કી ભી બાર બાર તૌફિક દી ઓર ઉન્હોં ને ભી ઈસ નેઅમતે ઉઝમા સે ખૂબ ફાઈદા ઉઠાયા. અલ્લાહ તઆલા ઉન કો ગરીકે રહમત કરે.

હઝરત મૌલાના અબ્દુર રહીમ સાહબ ને અપની પૂરી ઝિન્દગી અફીકા કી સરઝમીન પર દીની તાલીમ કી નશર વ ઈશાઅત મેં તમામ કર દી ઓર જબ આખિરત કે સફર કા વકત આયા તો બાકિયાતે સાલિહાત છોડ કર ચલે ગએ. હદીસ મેં આતા હે કે જબ ઈન્સાન મર જાતા હે તો ત્રીન ચીઝોં કા સવાબ ઉસ કે લિયે જરી રેહતા હે. એક તો સદકા જરિયા, મસલન કોઈ રિક્કાહી કામ અન્જમ દિયા, યા કોઈ મસ્જીદ વ મકતબ ઓર મદરસા બના દિયા, યા આમ પબ્લિક કે ફાઈદે કી ખાતિર કોઈ કામ કિયા, યા કોઈ ઈલ્મી કુતુબખાના કાઈમ કિયા, યા ઈલ્મી કિતાબેં ઓર તરનીફાત છોડી હોં ઓર શાગિદોં કા એક સિલસિલા હો, ઈસી તરહ નેક સાલેહ ઔલાદ છોડી હો, જો સઆદતમંદ હો ઓર વાલિદૈન કે લિયે દુઆ કરતી હો. માશાઅલ્લાહ, અલ્લાહ તઆલા ને હઝરત મૌલાના કો ત્રીનોં નેઅમતોં મેં સે હિસ્સા વાફિર અતા ફરમાયા કે ‘સિરાજુલ કારી’, ‘મહબ્બતનામે’, ‘હકીકતે શુક્ર’ વગેરા કિતાબેં ઓર હઝારોં શાગિદ છોડે, એક દીની તાલીમી ઈદારા છોડા, ઓર ફિર ઉસ કે તલત કિતને હી મકાતીબ છોડે ઓર નેક સાલેહ ઔલાદ છોડી.

અબ હઝરત મૌલાના કી ઝિન્દગી કી શામ હો ચુકી થી, ઈસ લિયે વો અપને આમાલ વ ખિદમાત કી ઉજરત કે લિયે લિકાએ રબ કે મુન્તઝિર થે, જો બગૈર મૌત કે મુમકિન નહીં. ઈસ લિયે હઝરત મૌલાના ને ભી યહી રાહ ઈખ્તિયાર કી, ઓર ૨૫ મુહરમ્બલ હરામ ૧૪૩૪ હિજરી મુતાબિક ૯ ડીસેમ્બર ૨૦૧૨ કી સુબહ

કી નમાઝ કે બાદ તમામ મામૂલાત સે ફારિગ હો કર અપને રબ કે હુઝૂર હાઝિર હો ગએ. ઈનના લિલ્લાહિ વઈનના ઈલૈહિ રાઝિઊન. શામ કો સાઢે તીન બજે નમાઝે જનાઝા હુઈ ઓર ચિપાટા કે આમ કબ્રસ્તાન મેં હમેશા હમેશ કે લિયે આસૂદાએ ખાક હો ગએ.

غفر الله له ورفع درجاته في جنات النعيم

ઈદારા અઝહર એકેડમી, લન્ડન





## તર્જમએ કુરઆન હઝરત મૌલાના યૂસુફ મોતારા દામ ઝિલ્લુલુમ

(સાહિબે મુકદ્દમા હાજા, હઝરત મૌલાના સાજીદુર રહમાન સાહબ સિદ્દીકી, ૪ સફરુલ મુઝફ્ફર ૧૪૩૩ હિજરી બરોઝ જુમુઆ ઈસ દારે ફાની સે રિલવત ફરમા ગએ. નમાઝે જનાઝા હઝરત મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ રફી ઉસ્માની સાહબ દામ ઝિલ્લુલુમ ને પઢાઈ. અલ્લાહ તબારક વ તઆલા મૌલાના મહૂમ કો અપને જવારે રહમત મેં બુલન્દ દરજાત સે નવાઝે. આમીન.)

الحمد لله محمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادي له، ونشهد أن لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد أن سيدنا ومولانا محمداً عبده ورسوله، وصلى الله عليه وعلى آله وصحبه وسلم. وبعد،

સચ્ચિદી વ મુશ્ચિદી હઝરત શૈખુલ ઈસ્લામ મુફ્તી મુહમ્મદ તકી ઉસ્માની મદ્ ઝિલ્લુલુમ ને અઝ રાહે કમાલે ઈનાયત ઈર્શાદ ફરમાયા કે અહકર હઝરત મૌલાના મુહમ્મદ યૂસુફ મોતારા સાહબ મદ્ ઝિલ્લુલુમ (મુહત્મીમ દારુલ ઉલૂમ બરી, ઈંગ્લેન્ડ) કે તર્જમાએ કુરઆને કરીમ કા મુતાલઆ કરે ઓર ઉસ કે બારે મેં અપની મુતવાઝિઆના રાય સે મૌસૂફ કો મુત્તલિઅ કર દે. અહકર ને હઝરત શૈખ કે ઈમાઅ કો હુકમ તસવ્વુર કરતે હુવે હઝરત મોતારા સાહબ મદ્ ઝિલ્લુલુમ કે તર્જમાએ કુરઆન કો લફ્કન લફ્કન પઢા ઓર જુસ્તા જુસ્તા અપની મુતવાઝિઆના રાય ભી તહરીર કી, જિસ કો હઝરત મોતારા સાહબ મદ્ ઝિલ્લુલુમ ને અપને અલ્તાફે કરીમાના સે શરફે કબૂલ ભી અતા ફરમાયા. ફલિલ્લાહિલ હમદુ વલહુશ્શુકર.

ઈસ અહકર કો અપની કમઈલ્મી કી બિના પર હઝરત મૌલાના મુહમ્મદ યૂસુફ મોતારા સાહબ મુદ્ ઝિલ્લુલુમ કી ગિરાંકદર શખ્સીયત ઓર ઉન કે હઝરત શૈખુલ હદીસ મૌલાના મુહમ્મદ ઝકરીયા કાન્હલ્વી નવ્વરલ્લાહુ મરકદહુ સે તઅલ્લુક કે બારે મેં આગહી હાસિલ ન થી. હઝરત શૈખુલ ઈસ્લામ મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ તકી ઉસ્માની દામત બરકાતુલુમ ને ઈસ આજિઝ કો ઝરૂરી કવાઈફ સે મુત્તલિઅ ફરમાયા. અગરયે મેં હરગિઝ ઈસ કાબિલ ન થા કે હઝરત મૌલાના મુહમ્મદ યૂસુફ મોતારા સાહબ મદ્ ઝિલ્લુલુમ કી શખ્સીયત ઓર ઉન કે તર્જમાએ કુરઆન કે બારે મેં કોઈ તહરીર સુપુરે કલમ કરતા, મગર બકોલે શાઈર

હિકાયત અઝ કદે આં યારે દિલનવાઝ કુનેમ  
બઈ બહાના મગર ઉમ્મે ખુદ દરાઝ કુનેમ

હઝરત શૈખુલ હદીસ મૌલાના મુહમ્મદ ઝકરીયા કાન્હલ્વી નવ્વરલ્લાહુ મરકદહુ કમાલાતે બાતિની ઓર મદારિજે ઈલ્મી કી ઉન બુલન્દિયોં તક પોંહયે હુવે થે કે બિલા તઅમ્મુલ ઉન કી શખ્સીયત કો સલફે

सावित्र की सीरत व किर्दार और उन के धर्म व अमल का अेक जामेअतरीन पैकर करार दिया जा सकता है. उजरत शैभुल उदीस का तअल्लुक कान्धला के उस अजीम पान्वाटे से था जिस का सिविसलअे नसब उजरत मुक्ती धवाडी बपशा साडब रडमतुल्लाहि अल्यल और फिर उपर उजरत अबू बक सिदीक रदियल्लाहु अन्हु तक पडोयता है.

उजरत शैभुल उदीस मौलाना मुडम्मद जकरीया कान्धल्ली रडमतुल्लाहि अल्यल ११ रमजानुल मुबारक १३१५ डिजरी को कान्धला में पैदा हुवे. आप के वालिद का नाम उजरत मौलाना मुडम्मद यडया कान्धल्ली रडमतुल्लाहि अल्यल और आप के जददे अमजद का धरमे गिरामी उजरत मौलाना मुडम्मद धरमाधल कान्धल्ली रडमतुल्लाहि अल्यल है. उजरत शैभुल उदीस रडमतुल्लाहि अल्यल ने धरमे उदीस अल्वलन अपने वालिद उजरत मौलाना मुडम्मद यडया कान्धल्ली रडमतुल्लाहि अल्यल और बाद अजां अपने मुरब्बी व मुशिद उजरत मौलाना पलील अडमद रडमतुल्लाहि अल्यल से डसिल किया और बजुलुल मजलूद की तालीक में अपने शैभ की मुआवलन इरमाध. उदीस और उलूमे उदीस शैभ का अस्ल जौकल मौजूअ और मेडनत व तडकीक का मैदान था और धरस को वो तकरुब धलल्लाड और तकरुब धललरसूल सल्लल्लाहु अल्यल वसल्लम का सब से बडा जरिया समजते थे और उस को उनडों ने अपना शिआर व दिसार बना लिया था यडां तक के शैभुल उदीस उन के नाम के काधम मकाम और उस से ज्यादा मशहूर हो गया था.

उजरत मौलाना मुडम्मद यूसुफ मोतारा साडब मद जिल्लुडुम उजरत शैभुल उदीस के तिलमीजे पास, उन के मुजजे बयअत और उन के मुकर्रबीने पास में से हैं.

उजरत मौलाना मुडम्मद यूसुफ मोतारा साडब मद जिल्लुडुमुल आली मोडतमीम दारुल उलूम बरी धंगलेन्ड मुडरमुल डराम १३६६ डिजरी (२५ नोवेम्बर १८४६) को अेक धीनी धराने में पैदा हुवे. धंभितदाध तालीम मदरसा तरगीभुल कुरआन, नानी नरोली, में डसिल कर के १८६१ में रान्दर के मशहूर मदरसा जमिआ हुसयिनया में दाभला लिया और डिदाया अल्वलन तक यडीं तालीम डसिल की. बाद अजां मजलिर उलूम (सडारनपूर) में दाभला लिया और शैभुल उदीस उजरत मौलाना मुडम्मद यूनुस साडब से मिशकत पढी और जलालैन मौलाना मुडम्मद आकिल साडब से और डिदाया सालिस मौलाना मुक्ती मुडम्मद यडया साडब से पढी. उस के बाद नसाध और अबू दारूद उजरत मौलाना मुडम्मद यूनुस साडब जोन्पूरी से, तिमिजी और सडील मुसलिम उजरत मौलाना मुक्ती मुजइर हुसैन साडब से और तडावी उजरत मौलाना असअदुल्लाड साडब से पढी और सडील बुपारी (मुकम्मल) उजरत शैभ मौलाना मुडम्मद जकरीया कान्धल्ली रडमतुल्लाहि अल्यल से पढी.

दौराने तालीम डी धरल्लाड की डिकर दामन्गीर हुध और उजरत मौलाना अडमद अदा गोधरवी के मशपरे से उजरत शैभुल उदीस मौलाना मुडम्मद जकरीया कान्धल्ली रडमतुल्लाहि अल्यल से बयअत के लिये उन की पिटमत में अरीजा धरसाल किया जिस को उजरत शैभुल उदीस ने शरके कबूल बपशा और दाभिले सिलसिला इरमा लिया.

तअल्लुके ईराहत कार्म लोने के बाद तावीम के साथ मामूलात का सिलसिला भी जारी रहा। उजरत शैभ से पेडवी मुलाकात उस वक्त हुई जब उजरत शैभुल उदीस नवरव्वाहु मरकदु और उजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साडभ रडमतुल्लाह अलख (अमीर तब्वीगी जमाअत) सङ्गे उज के विये तशरीफ़ ले जा रहे थे, और देडवी से अम्बई आने वाले थे। सूरत के शार्फ़ीने मुलाकात उजारों की तादाद में रेवे स्टेशन पर जमा हो गये थे जिन में अमिअल दुसयनियल, महरसा अशरफ़ीयल (रादर) और महरसा अमिअल ईस्लामीयल (डामेल) के तलबा व असातिजा के अलावा उजारों अवाम सरापा ईशतियाके जियारत बन कर शुङ् रात ही से वहां पड़ोय गये थे। सुभल यार अजे ट्रेन स्टेशन पर पड़ोयी। ट्रेन के ठेडेरने का वक्त सिर्फ़ तीन मिनट था, मगर ट्रेन पंदरा मिनट ठेडरी रही, और मुशताकाने जियारत ने उजरत का दीदार किया और उजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साडभ रडमतुल्लाह अलख ने ट्रेन के दरवाजे में अडे हो कर डाजिरीन से अिताअ इरमाया, जो ट्रेन की रवानगी तक जारी रहा।

१३८४ डिजरी में उजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साडभ मद् जिल्लुडुम की उजरत शैभुल उदीस की अिदमत में अपने बिरादरे मोडतरम उजरत मौलाना अब्दुर रडीम साडभ की मईयत में डाजिरी हुई। मौलाना अब्दुर रडीम साडभ दौराअे उदीस से इरागत के बाद उजरत शैभुल उदीस की अिदमत में मुस्तकिल क्काम का ईरादा रअते थे। बिरादरे मोडतरम के डमराड सडारनपुर पड़ोय गये। और उजरत शैभुल उदीस रडमतुल्लाह अलख की अिदमत में डाजिरी का शरफ़ डासिल हुआ। ‘अश्ये घर में कदम रअते ही यौअट से आगे कदम अढाना मुशकिल हो गया। नअरें युरा कर देआ तो निगालें यका यौद हो गईं। आइताअ की तरड पुरज्जाल येडरा, जिस में निगालों को अैरा करने वाली अर्कअार आंअें, सर अुवा हुआ, आस्तीनें यढी हुईं, रडार जानू जल्लाअइरोज हैं।’

उसी साल उजरत शैभुल उदीस रडमतुल्लाह अलख ने पूरे माड के अैतेकाइ का सिलसिला महरसा कदीम की दइतर वाली मस्जिद से शुङ् किया। मस्जिद मौतकिईन से अर गई।

गर्ज, उजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साडभ मद् जिल्लुडुम ने सडारनपुर के अपने क्काम के दौरान अपने तावीमी मराडिल भी मुकम्मल किये और उजरत शैभुल उदीस मौलाना मुहम्मद अकरीया कान्धल्वी नवरव्वाहु मरकदु से इडानी इयूअ भी डासिल करते रहे।

दौराअे उदीस से इरागत के बाद वालिदा ने ईंगलिसतान में मुकीम रिशतेदारों में निकाल ते कर दिया और उजरत शैभुल उदीस ने उडुम इरमाया के ‘अओ, सूरत अ कर वालिदैन की अिदमत करो.’ यंद माड बाद वालिदे मोडतरम का ईन्तकाल हो गया और मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साडभ मद् जिल्लुडुम ईंगलिसतान तशरीफ़ ले गये।

१३८८ में उजरत शैभुल उदीस नवरव्वाहु मरकदु रमजानुल मुअरक में डरमैन तशरीफ़ लाये और पंदरा रोज़ मक्का मुक़र्रमा में क्काम इरमाया और आअिरी अशरे में अैतेकाइ इरमाया। दौराने अैतेकाइ अक शअ तरावीड वगैरा से इरागत के बाद उजरत शैभुल उदीस नवरव्वाहु मरकदु ने उजरत मौलाना मुहम्मद

यूसुफ़ मोतारो साडभ मद् जिल्लुडुम को याद इरमाया और आप को बयअत की ईजाजत अता इरमाई और अपने दरते मुबारक से मिशवळ पेडनाया.

उजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साडभ मद् जिल्लुडुम का उजरत शैभुव उदीस नव्वरव्वाळु मरकदु से बडोत गेडरा और मर्भूत तअल्लुक रडा और ये तअल्लुक उजरत शैभुव उदीस नव्वरव्वाळु मरकदु की उयात के आभिरि लम्हात तक जरी रडा. उजरत शैभुव उदीस रडमतुव्वाळि अलखड के ईमा पर आप ने ईंगलिसतान में दारुव उलूम काईम किया और दीनी तालीम व तर्बियत का अलतेमाम इरमाया. और उजरत शैभुव उदीस रडमतुव्वाळि अलखड ने तडरीर इरमाया के:

‘ईन्शाअव्वाळ, तुम्हारे महरसे की जडरीयात अव्वाळ की जात से कवी उम्मीद है के जव्द पूरी डो जअेगी.’

दारुव उलूम के मुतअद्विक अेक दूसरे गिरामीनामे में ये भी तडरीर इरमाया के:

‘कारी यूसुफ़! तुम्हारे महरसे का इक्क मुण्डे भी ईन्शाअव्वाळ तुम से कम न डोगा. दिव से दुआअे भी कर रडा डूं.’

‘मगर मेरे प्यारे! ईन मशागिले आविया में लग कर डमारी वाईन को भैरबाद न केड देना. दीनी कामों में कूवत इडानीयत से डोती है. मामूलात की पाबन्दी और कम से कम आध घंटा यकसूई का रपना बडोत डी जडरी है.’

ईसी तरड अेक मकतूब में तडरीर इरमाने हैं,

‘मगर प्यारे यूसुफ़!

है यडी शर्ते वफ़ादारी के बे यूनो यिरा  
वो मुण्डे याडे न याडे, में उसे याडा कइं

मुण्डे तो तुम्हारे दारुव उलूम ने अैसा पागल बना रपा है के डर वक्त उसी का पयाव और सोय भीयार उसी का रेडता है. तुम तो माशाअव्वाळ

مقی ما تلق من تهوی، دد الدنيا وأهملها

के मर्तबे पर इाईज डो और तुम्हारे भुदाम तुम से भी भीस गज आगे. ये तो प्यारे! जो अपने बडों के साथ जैसा सुलूक करता है, छोटे उस के साथ यडी करते हैं. मुन्तजिर रडो.’

आम तौर पर मुसलमानों का दीनी व ईल्मी ईन्डितात अब ईस दर्ज गेडरा और मुडीत डो युका है के आम्मतुव मुस्लिमीन भुजुगों की उई तडरीरों के पढने और उन के कमा डकडुडु समज्जने पर भी कादिर नडीं रडे. ये अम्र अेक नागुजीर जडरत बन कर सामने आ गया है के ईल्मे दीन की ईशाअत व तबलीग के लिये उई जभान के सडल और रवां उस्लूबे निगारिश को तरज्जु दी जअे और ईल्मी दकाईक के बजअे अस्व डकीकत से इशानास कराने की इक्क की जअे. भुद ये कुरआने करीम के उई के तराजिम अब आम मुसलमानों के लिये काबिले इडम नडीं रडे ईस लिये ये अेक नागुजीर तकाजा था के मौजूदा जडरतों के पेशे

નજર કુરઆને કરીમ કા સલીસ ઓર રવાં કાબિલે ફૂલમ ઉર્દૂ મેં તર્જમા ક્રિયા જાએ. અલ્લમદુ લિલ્લાહિ વલ્મિન્નહ કે હઝરત મૌલાના મુહમ્મદ યૂસુફ મોતારા સાહબ મદદ ઝિલ્લુલુમ ને ઈસ ઝરત કો બહોત અહસન તરીકે સે મુકમ્મલ ફરમા દિયા.

યે અલ્લાહ તઆલા કા ફૂલ વ કરમ ઓર ઉસ કા એહસાને અઝીમ હે કે ઝેરે નજર તર્જમાએ કુરઆન મુતઅદ્દ ખૂબિયોં ઓર ગૂનાગૂં ઝાહિરી ઓર મઅનવી મહાસિન કા જામેઅ બન ગયા હે. બતૌરે ખાસ ઈસ તર્જમાએ કુરઆન કે ચંદ નુમાયાં પેહલૂ હરબે ઝૈલ હેં:

- ❖ યે તર્જમાએ કુરઆન સહાબાએ કિરામ રદિયલ્લાહુ અન્હુમ ઓર સલફે સાલિહ કે તફ્સીરી નુકાત પર મુશ્તમિલ હે.
- ❖ તર્જમાએ કુરઆન મેં આયાત કે ફિક્કહી પેહલૂ અખૂબી ઉજગર હો ગએ હેં.
- ❖ હર આયાત કા તર્જમા પિછલી ઓર મા બાદ આયાત સે મર્બૂત હોને કે સાથ સાથ અપની જગા પર મુસ્તકિલ હે.
- ❖ તર્જમા સલીસ, રવાં ઓર આમ ફૂલમ હે.
- ❖ ઈસ તર્જમે કી મદદ સે કુરઆને કરીમ કે મઝામીન કો સમજહના ઓર ઝહનનશીન કરના આસાન હો ગયા હે.

જહાં તક નઝરે સાની કા તઅલ્લુક હે, તો યે મહઝ તૌફીકે રબ્બાની ઓર બુઝુર્ગોં કે કુયૂઝ વ બરકાત હેં કે અહકર અપની ઈલ્મી બેબિઝાઅતી કે બાવજૂદ ઈસ ખિદમત કી અન્જમદહી કે કાબિલ હુવા હે. અહકર ને યે તર્જમા દો મર્તબા બિલઈસ્તીઆબ હર્ફન હર્ફન પઢા હે ઓર દીગર ઉર્દૂ તરાજિમ સે મુવાઝના ક્રિયા હે. ઓર બતૌરે ખાસ સયિદી વ મુર્શિદી હઝરત મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ તકી ઉસ્માની દામત બરકાતુલુમ કે આસાન તર્જમાએ કુરઆન કો પેશે નઝર રખા હે. અલ્લાહ તઆલા કા ઈસ આજિઝ પર એહસાને અઝીમ ઓર લુન્ફે અમીમ હે કે તર્જમાએ કુરઆન પર નઝરે સાની કા તમામ કામ ઈસી નહજ પર મુકમ્મલ હુવા. ફલિલ્લાહિલ હમદુ વશશુક.

દસ્ત બદુઆ હૂં કે અલ્લાહ તઆલા ઈસ કોશિશ વ કાવિશ કો શરફે કબૂલ સે સરફરાઝ ફરમાએ ઓર ઈસ ખિદમત કો ઝખીરએ આખિરત બનાએ ઓર ઈસ કે ઝરિયે મુસલમાનોં મેં કુરઆન કે સમજહને ઓર ઉસ કે મુતાબિક અપની ઝિન્દગિયોં કો સંવારને કા ઝૌક વ શૌક પૈદા ફરમાએ. આમીન. વમા ઝાલિક અલ્લાહિ બિઅઝીઝ.

(હઝરત મૌલાના ડાક્ટર) સાજ્જદુર રહમાન સિદ્દીકી (રહમતુલ્લાહિ અલયહ)

૧ મુહર્રમુલ હરામ ૧૪૩૨ હિજરી

